बदलते दौर में खलनायक ले चुके नायक की जगह

गोविंद वल्लभ पंत संस्थान की ओर से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन पर बोलीं ममता कालिया

संवाद न्यूज एजेंसी

पंत संस्थान में सेमिनार में बोलतीं वरिष्ठ साहित्यकार ममता कालिया। संवाद

झूंसी। जानी मानी कथा लेखिका ममता कालिया का कहना है कि हिंदी लेखन के बदलते दौर में अब नायकों की जगह खलनायकों ने ले ली है। विभिन्न परिस्थितियों और काल में हिंदी साहित्य के लेखन में अलग-अलग नायक हुए हैं। लेकिन, अब दौर बदल रहा है। ऐसे में साहित्यकारों को अब अपनी लेखनी का नजरिया बदलना होगा।

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत जीबी पंत संस्थान में साहित्य अकादमी के सहयोग से आयोजित दो दिनी राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन पर 'साहित्य में नायक की भूमिका' विषयक संगोष्ठी में बतौर अध्यक्ष उन्होंने कहा, शेक्सपीयर के ट्रैजिक हीरो के जमाने गए।

मौजूदा समय खलनायकों का है। हमें अपनी लेखनी के पैमानों की पड़ताल नए सिरे से करनी होगी। लेखन की नई दृष्टि विकसित करनी होगी।

'संस्कृति और नायक' विषयक प्रथम सत्र में प्रो.ललित जोशी ने कहा, स्क्रीन इमेज बहुत महत्वपूर्ण होती है जो कई बार खलनायक को नायक के बराबर खड़ा कर देती है। सत्र के अध्यक्ष प्रो. नंदकिशोर आचार्य ने कहा, इतिहास के सभी पक्षों को जाने बिना नायकत्व का निर्णय करना कठिन है।

कथाकार अखिलेश ने कहा, आधुनिक युग नायकत्व से मोहभंग का है। जगन्नाथ दुबे ने जोड़ा, धरती को स्वर्ग बनाने की आकांक्षा नायक बनाती है।

तृतीय सत्र में 'हाशिए के नायक' विषयक संवाद में प्रीति चौधरी ने कहा, स्त्रीत्व को नायकत्व के साथ समझना होगा।

यह परस्पर विरोधी नहीं है। श्योराज सिंह बेचैन ने कहा, नायकों को देखने की दृष्टि देखने वाले की परंपरा पर निर्भर करती है। जबकि देवेंद्र चौबे ने कहा, समाज जब संकट के दौर से गुजरता है, तभी नायक पैदा होते हैं।

सत्र अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार शरण कुमार लिंबाले ने कहा, बाबा साहेब ने हमें यहां खड़े होने की शक्ति दी। दलितों के बीच नायकों की जरूरत और उसके विश्लेषण पर चर्चा करते हुए लिंबाले ने कहा, हमें कम न आंको, हमारे भी हीरो हैं जिन्हें इतिहास ने अदृश्य बना दया। संस्थान के निदेशक बद्री नारायण ने संयोजन और संस्थान की एसोसिएट प्रो डॉ. अर्चना सिंह ने संचालन किया।